International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

वाल्मीकि रामायण में गुण, रीति एवं रस

डॉ० अनिल कुमार सिंह
पूर्व शोध छात्र,
विभाग संस्कृत,
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुज़फ्फरपुर, बिहार, भारत।

सारांश – किसी भी काव्य में अलंकारों की उपस्थिति अनिवार्य है। अलंकारों तथा गुणों में भी गुण की उपस्थिति प्रधान मानी जाती है, क्योंकि अलंकार संपन्न होने पर भी यदि किसी काव्य में गुण का अभाव है तो वह काव्य हो ही नहीं सकता।

अलङ्कृतंपि श्रव्यं न काव्यं गुण वर्जितं।
गुण्योगास्तयोर्मुख्यो गुणलंकार योग्यो।।

काव्य में सदा विद्यमान रहने वाले शोभा के उत्कर्ष को बढ़ाने वाले रस के धर्म को गुण कहते हैं। शूरता, वीरता, उदारता आदि गुण जिस प्रकार आत्मा के उत्कर्ष धायक होते हैं, ठीक उसी प्रकार माधुर्य, ओज और प्रसाद गुण भी अंगी रस के उत्कर्ष धायक हैं। गुणों से काव्य की आत्मा प्रदीप्त होती है - ऐसा भरतमुनि भी कहते हैं। दंडी ने अपने काव्य में कुल दस गुणों की बात मानी है, परंतु मम्मट ने माधुर्य, ओज और प्रसाद गुण में इन्हें समाहित कर दिया है।

मुख्य शब्द - वाल्मीकि, काव्य, महाकाव्य, रामायण, गुण, रीति, रस।

माधुर्य गुण– रामायण माधुर्य गुण प्रधान महाकाव्य है। वाल्मीकि ने रामायण को गीति मधुर काव्य कहा है। पाठ्ये गेये च मधुरं[1] माधुर्य गुण चित्त की द्रवीभूत होने का कारण है। यह मन में आह्लाद उत्पन्न करता है और ऋंगार रस में रहने वाला है। रामायण के प्रकृति वर्णन में अतिशय माधुर्य है। विभिन्न ऋतुओं, नदियों, चंद्रोदय आदि के वर्णन में मधुरता सर्वत्र विद्यमान है। रात्रि में लंका का निरीक्षण करते हुए हनुमान ने चंद्रमा की जो शोभा देखी, उसका कवि ने मधुरता पूर्ण वर्णन किया है।

या भाति लक्ष्मीर्भुवि मन्दरस्तथा
यथा प्रदोषेषु च सागरस्तथा ।
तथैव तोयेषु च पुष्करस्तथा
रराज सा चारुनिशाकरस्तथा ।
हंसो यथा राजतपंजरस्थ:
सिंहो यथा मंदरकन्दरस्थः।

ओजोगुण– ओज गुण चित्त के विस्तार रूप दीपकत्व का जनक होता है। "ओज" वह गुण है जिसे सामाजिक ह्रदय का प्रज्ज्वलन कहा जा सकता है। यह गुण वीर रस में स्वभावत: हुआ करता है, और जिससे ऐसा लगता है, जैसे चित्त की सारी शीतलता अकस्मात नष्ट हो गई और बदले में चित्त उद्दीप्त हो उठा। वीर, वीभत्स एवं रौद्र रसों में ओज गुण उत्कर्षवर्धक माना जाता है [2]

दीपत्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीरर स्थिति: ।।
विभत्सरौद्ररसयोस्तस्याधिक्यं क्रमेण च।

रामायण में सर्वत्र ओज गुण की प्रधानता है।[3]

ततो निधूय सहसा शिरो नि:श्वस्य चासकृत।
पाणिं पाणौ विनिष्पष्य दन्तान् कटकटाय्य॥

यहां पाणिं पाणौ विनिष्पष्य दन्तान् कटकटाय्य इस श्लोक आज से रौद्र रस अभिव्यक्त हुआ है, जिसमें ओजगुण विद्यमान है।

प्रसाद गुण – जिस गुण की सत्ता से काव्य से सहृदय की आत्मीयता अविलंब हो जाती है, वही प्रसाद गुण है। प्रसाद गुणों से संपन्न काव्य में द्राक्षापाक की तरह रस का स्पष्ट आभास होता है । प्रसाद गुण सभी रसों का एक ऐसा धर्म है, जिससे सामाजिक ह्रदय उसी प्रकार भर जाता है , जिस प्रकार अग्नि के द्वारा सूखा इंधन अथवा जल के द्वारा साफ कपड़ा।

पुष्पवृष्टिर्महत्यासीदन्तरिक्षात् शुभास्वरा।[4]

रामयण में प्रसाद गुण पुष्पवृष्टि प्रसंग में भी दृष्टिगोचर होता है।[5]

रीतियोजना – किसी बात को कहने का एक विशेष प्रकार या शैली ही रीति कहलाती है। वामन ने काव्य में रीति को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने रीकि को ही काव्य की आत्मा माना है। रीति की परिभाषा करते हुए वामन लिखते हैं - विशिष्टपदरचना रीतिः[6] अर्थात् विशेष प्रकार की पद रचना को रीति कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार पदों के मेल या संगठन को रीति कहते हैं।

पदसंघटना रीतिरंगसंस्थाविशेषवत् ।[7.] वैदर्भी ,गौडी और पांचाली के भेद से रीति तीन प्रकार की होती है ।[8.]

वैदर्भी रीति – समस्त गुणों से युक्त वैदर्भी रीति होती है।[9] "समग्रगुणा वैदर्भी।" दोष रहित और समस्त गुणों से युक्त वीणा के स्वर के समान मधुर लगने वाली वैदर्भी रीति होती है[10]

अपृष्ठा दोषमात्राभिः समग्रगुणगुम्फिता।
विपंचीस्वरसौभाग्या वैदर्भी रीतिरिष्यते ॥

वाल्मीकि रामायण में वैदर्भी रीति की प्रमुख रूप से संगति मिलती है । कवि ने इसमें पूर्ण रूप से कोमल एवं माधुर्यपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया है। रामायण की उत्तम शैली के गुणो व तत्वों का उल्लेख करता हुआ प्रकृति का अद्भुत चित्रण करता है। प्रकृति का भावपूर्ण वर्णन करते समय वाल्मीकि ने वैदर्भी रीति का विशेष प्रयोग किया है। प्रकृति चित्रण वाले स्थलों में भी विशेष सरसता दृष्टिगोचर होती है।

वाल्मीकि रामायण का यह श्लोक च वर्ण की सुंदर योजना से पाठकों का मन स्वत: आकर्षित करता है।[11]

वाल्मीकि रामायण 4/30/45

चंचच्चन्द्रकरस्पर्शहर्षोन्मीलिततारका ।
अहो रागवती संध्या जहाति स्वयमम्बरम् ॥

गौड़ी रीति – ओज और कांति नामक केवल दो गुनो से युक्त गौड़ी होती है।[12] "ओजः कांतिमति गौड़ीया " काव्यालंकार सूत्र। माधुर्य तथा सौकुमार्य गुणों के न होने से यह गौडी रीति समासबहुल और अत्यंत उग्र पदों वाली होती है। रामायण में अनेक स्थलों पर दीर्घ , समास युक्त ,विकट शब्द संघटना द्वारा भाषा में ओजस्विता आ गई है । जहां कवि ने दीर्घ समासयुक्त उग्र पदों की संघटना की है , वहाँ गौड़ी रीति के उदाहरण उपलब्ध होते हैं । परशुराम धनुष पर बाण चलाने का आग्रह करते हुए राम से करते हैं-
तदेवं वैष्णवं राम पितृपैतामहं महत्।

क्षत्रधर्म पुरस्कृत्य गृहणीष्व धनुरूत्तमम्॥
योजयस्व धनुःश्रेष्ठे शरं परपुरंजयम् ।
यदि शक्तोअ्सि काकुत्स्थ द्वन्द्वं दास्यामि ते ततः ॥[13]
यहाँ परशुराम की वाणी में ओजस्विता है ।

पांचाली रीति –_ माधुर्य और सौकुमार्य से युक्त पांचाली रीति होती है।[14] न्याय और सदाचार की बातों को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए वाल्मीकि ने पांचाली रीति का प्रयोग किया है। अयोध्या नगरी जी स्थिति का वर्णन करते हुए कवि कहता है -

कोशलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदो महान् ।
निविष्टः सरयूतीरे प्रभूतधन्वान्यवान ॥
अयोध्यानमनगरी तत्रासील्लोकविश्रुंता ।
मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम् ॥[15]

युद्धकाण्ड में सीता की उक्ति इस रीति को ही दर्शाती है ।[16.]

यथा मां शुद्धचरित्रां दुष्टां जानाति राघवः ।
तथा लोकस्य साक्षी मां सर्वतः पातु पावकः॥

सीता के इस कथन में माधुर्य और सौकुमार्यरूप गुणों का मिश्रण है अतः पांचाली रीति है।

रसाभिनिवेश – आचार्य भरत अपने नाट्य शास्त्र में स्कोर विशेष महत्व देते हैं । उनके अनुसार रसके बिना कोई भी नाट्यांगरूप अर्थ प्रवृत्त नहीं हो सकता है ।[17] आनंदवर्धन ने ध्वन्यालोक में आदि कवि वाल्मीकि के शोक के उत्पन्न श्लोक उत्पत्ति का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहां है कि काव्य की आत्मा वही (प्रतीयमान) अर्थ (रस) है ।[18] काव्यस्यात्मा स **एवार्थस्तथा चादिकवेःपुरा ।**

क्रौंचद्वंद्ववियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः ॥

साहित्यदर्पणाकार विश्वनाथ ने तो रसात्मक वाक्य को ही काव्य कहा है।[19] उन्होंने रसादि को काव्य की आत्मा और शब्द व अर्थ को काव्य का शरीर कहां है।[20.] वाल्मीकि रामायण के प्रारंभ में कहा गया है कि कुश और लव ने श्रृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, भयानक, वीर आदि रसों से युक्त इस काव्य का मान किया था।

रसैः शृंगारकरुणहास्यरौद्रभयानकैः ।

वीरादिभी रसैर्युक्तं काव्यमेतदगायताम् ॥

यहां आदि पद से विभत्स, अद्भुत तथा शांत रस को मान लेने पर वाल्मीकि रामायण में नव रसों की स्थिति होने की पुष्टि हो जाती है। रामायण का अध्ययन करने पर वाल्मीकि का यह कथन सिद्ध होता है।

अंगी रस– अंगीरस के विषय में आनंद वर्धन कहते हैं कि प्रबंधों में अनेक रसों का समावेश प्रसिद्ध होने पर भी कवि को किसी एक रस को अंगी (प्रधान) रस जरूर बनाना चाहिए ।[21]. भरत मुनि का कथन है कि अनेक समवेत रसों में जिस एक का स्वरूप मुख्य हो उसे स्थाई तथा शेष को संचारी भाव समझना चाहिए। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार अंगीरस का प्रधान लक्षण है- बहुव्याप्ति:। प्रबंधेषु प्रथमतरं प्रस्तुत: सन् पुन: पुनरनुसंधीयमानत्वेन स्थायी यो रस: प्रबंन्धेषु प्रथमप्रस्तुतत्वेन पुनरनुसंहितत्वेन च या रस: स्थायी भवतित्यर्थ:। प्रबंधकाव्ये अभिव्यक्तेषु नानारसेषु यो रस: कथानककलेवरं सर्वतोधिकं व्यापनोति स एव अंगी रसः।**[22]** अर्थात् प्रबंधों में प्रथम प्रस्तुत और बार-बार अनुशंसित होने से जो रस स्थायी है , प्रबंध काव्य में अभिव्यक्त नाना रसों में जो रस कथानक के कलेवर में सर्वाधिक व्याप्त हो वही अंगी रस होता है। वाल्मीकि रामायण में मूल स्थायी भावों से आधार बनाकर रस - योजना की गई है। संचारी आदि भावों के आधार पर बहुत कम स्थलों पर रस योजना की गई है। वाल्मीकि रामायण का अंगिरास - करुण रस– अधिकांश भारतीय विद्वान तथा पाश्चात्य आलोचक करुण रस को वाल्मीकि रामायण का अंगी रस मानते हैं।[23.] ध्वन्यालोक के लेखक आनंद वर्धन वाल्मीकि रामायण में करुण रस को प्रधान रस मानते हुए लिखते हैं - "रामायण हि करुणो रस:" [24] आचार्य विश्वनाथ ने भी रामायण में करुण रस की प्रधानता स्वीकार की है। " रामायणे करुण:"। [25.]

करुण रस की परिभाषा – इष्ट के नाश और अनिष्ट की प्राप्ति से करुण रस की उत्पत्ति होती है। इसका वर्ण कपोत तथा देवता यमराज हैं। करुण रस का स्थाई भाव शोक होता है ।
विनष्ट बंधु आदि शोचनीय व्यक्ति आलंबन विभाग होते हैं और उसका दाहकर्म आदि उद्दीपन होते हैं। प्रारब्ध की निंदा, भूमिपतन, रोदन, विवर्णता, उच्छवास, नि:श्वास ,स्तंभ और प्रलाप इस रस में अनुभाव होते हैं। निर्वेद, मोह, अपस्मार ,व्याधि, ग्लानि ,स्मृति, श्रम ,विषाद, जड़ता, उन्माद और चिंता आदि करुणरस के व्यभिचारी हैं।[26.] महर्षि वाल्मीकि ने करुण रस को अंगिरास के रूप में प्रतिष्ठित किया है । अन्य रस करुण रस के अंग रूप हैं । करुण भाव ही वाल्मीकि रामायण की रचना का प्रेरणा स्रोत रहा है। वाल्मीकि रामायण में शोक से ही श्लोक की उत्पत्ति बताई गई है ।[27] ग्रंथ का आरंभ क्रौंचवध की घटना से हुआ है , जो शोक से परिपूर्ण होने के कारण करुण रस की स्थापना करता है । ग्रंथ की समाप्ति सीता के रसातल - प्रवेश से होती है जो शोक से परिपूर्ण है । इस प्रकार इस महाकाव्य का आरंभ और अंत दोनों करुण रस से परिपूर्ण हैं । अयोध्या कांड एवं उत्तर कांड में करुण रस चरम सीमा में अभिव्यक्त हुआ है। अन्य कांडों में भी अनेक कारुणिक प्रसंग विद्यमान हैं । राम, सीता और लक्ष्मण का वन गमन, राजा दशरथ की मृत्यु ,सीता का हरण , बाली की मृत्यु पर तार का विलाप, रावण के अंत:पुर में सीता का विलाप , इंद्रजीत के द्वारा नागमय बाणों से राम- लक्ष्मण को बांधना , रावण की शक्ति से लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम का विलाप , राक्षस सेना का संघार होने पर राक्षसियों का विलाप , रावण की मृत्यु पर उसकी स्त्रियों का विलाप , राम के द्वारा सीता का परित्याग , सीता के रसातल में प्रवेश करने पर राम का खेद आदि स्थल करुण रस की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण हैं ।

वाल्मीकि रामायण में अन्य रस– वाल्मीकि रामायण में करुण रस के साथ-साथ श्रृंगार, वीर ,रौद्र, भयानक , अद्भुत आदि रसों का भी प्रसंगानुसार प्रयोग हुआ है। ये सभी रस करुण रस के सहायक बन कर आए हैं। श्रृंगार रस में भी संयोग एवं वियोग श्रृंगार का प्रयोग मिलता है । अरण्य कांड में वर्णन आता है कि जब राम खर- दूषण तथा त्रिशिरा सहित चौदह हजार राक्षसों के वध के पश्चात सीता से मिलते हैं, तो सीता बार-बार राम का आलिंगन करती हैं। वाल्मीकि रामायण में कुछ अन्य स्थलों पर भी श्रृंगार रस का आभास होता है । जैसे राम के प्रति शूर्पणखा का प्रेम , सीता से रावण की प्रणय- याचना, बालि- वध के पश्चात सुग्रीव के प्रति तारा का प्रेम आदि। रामायण में वियोग श्रृंगार का भी प्रयोग मिलता है। सीता हरण के पश्चात राम के दुख का कवि ने बहुत ही सजीव व हृदयद्रावक वर्णन प्रस्तुत किया है। आश्रम में सीता को न पाकर राम व्यथित हो जाते हैं । उन्हें लगता है कि सीता के बिना दो घड़ी भी जीवित नहीं रह सकेंगे। अशोक वाटिका में अपने प्रियतम राम के वियोग में डूबी हुई सीता का भी चित्रण वियोग के रूप में करना वाल्मीकि की विशेषता रही है। उत्तम पात्र में वीर रस का प्रयोग रामायण की खासियत है । वीर रस का स्थाई भाव उत्साह है। देवता महेंद्र और रंग सुवर्ण के जैसा है । इसमें जीतने योग्य रावण आदि आलंबन तथा उनकी चेष्टा आदि उद्दीपन होते हैं । युद्ध के सहायक धनुष आदि का अन्वेषण इसके अनुभाव हैं । धैर्य , मति, गर्व , स्मृति, तर्क , रोमांच आदि वीर रस के संचारी भाव हैं । यह वीर रस चार प्रकार का होता है - दानवीर, धर्मवीर , युद्धवीर और दया वीर ।रामायण में युद्ध वीर , दानवीर , धर्मवीर और दयावीर चारों प्रकार के वीर रस की अभिव्यंजना है। इसके नायक राम में उपर्युक्त चारों प्रकार की वीरता प्रकट हुई है । तथापि उनका शूरवीर रूप ही अधिक प्रकट हुआ है। वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकांड में राम के राज्याभिषेक में विघ्न पड़ता देखकर लक्ष्मण का क्रोध बढ़ जाना , उनकी भृकुटी का चढ़ जाना , लंबी - लंबी सांसे लेना सभी रौद्र रस का अनुपम उदाहरण है।

रामायण में भयानक रसपूर्ण प्रसंगों का समावेश अनेक स्थलों पर है। कैकई की वर याचना से अयोध्या-वासियों में भय और आतंक व्याप्त है। राम और लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव का भयभीत होना, बाली का वध होते देखकर बानरों के हृदय में भय का संचार होना भयानक रस के उदाहरण माने जाते हैं। वाल्मीकि रामायण प्रसंगानुसार वीभत्स रस की संयोजना हुई है। वानरों एवं राक्षसों के युद्ध वर्णन में कवि ने रणभूमि में रक्त तथा लाशों से भर जाने का जो दृश्य उपस्थित किया है, वह अत्यंत विभत्स है। वाल्मीकि रामायण में अद्भुत रस का भी महत्वपूर्ण स्थान है । राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ में देवताओं का भगवान विष्णु से मानव रूप में अवतीर्ण होने को कहना, प्रजापत्य पुरुष का प्रकट होकर खीर अर्पित करना , उस खीर को खाकर रानियों का गर्भवती होना आदि प्रसंग अद्भुत रस का संचार करते हैं। अरण्यकांड में माया मृग को देखकर सीता का विस्मय अद्भुत रस का ही स्थापना कर रहा है। अनेक प्रसंगों में देवताओं का प्रकट होना , आकाश से पुरुष वर्षा होना , जय जय कार होना आदि कार्य भी विस्मयपूर्ण है। सीता का अग्नि में प्रवेश तथा अग्नि देवता का सीता को लेकर चिता से प्रकट होने का प्रसंग अद्भुत रस की ही सृष्टि करता है। राम- रावण युद्ध में रावण का एक के बाद एक नया मस्तक उत्पन्न होना विस्मयजनक है। रामायण में हास्य - परिहास की भी चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त रामायण में कवि के द्वारा कहीं कहीं शांत रस की अभिव्यंजना भी हुई है। राम के द्वारा सीता से किए गए चित्रकूट के वर्णन में शांत रस दिखाई पड़ता है। वात्सल्य रस का प्रयोग भी रामायण में मिलता है। माता कौशल्या का राम के प्रति स्नेह वात्सल्य रस का ही उदाहरण है। समग्रता में हम निसंदेह कह सकते हैं कि रामायण करुण रस की नींव पर खड़ा कई रसों को अपने कलेवर में समाहित किया हुआ है।

सन्दर्भ -

1. वा० रा० 1/4/28. 1/4/17-19.
2. मम्मट का०प्र० 8/69-70.
3. वा० रा० 1/26/6,23. 1/76/8. 2/35/1-2,2796/28-30. 3/2/5-6, 3730/20. 4/31/29.
4. मम्मट का०प्र० 8/70-71
5. वा० रा० 1/73/37
6. वामन , कव्यालांकार सूत्र 1/2/7.,1/2/6. "रीतिरात्मा काव्यस्य"
7. विश्वनाथ साहित्य दर्पण 9/1
8.वामन , कव्यालांकार सूत्र 172/9.
9. .वामन , कव्यालांकार सूत्र, 1/2/11.
11. वाल्मीकि रामायण 4/30/45

चंचच्चन्द्रकरस्पर्शहर्षोन्मीलिततारका ।
अहो रागवती संध्या जहाति स्वयमम्बरम्

12 ."ओज: कांतिमति गौड़ीया " काव्यालंकार सूत्र।
13. वाल्मीकि रा० 1/75/27-28.
14. माधुर्यसौकुमार्योपपन्ना पांचाली" वामन काव्यालंकारसूत्र , 1/2/13
15. वा० रा० 1/5/5-6.
16. यथा मां शुद्धचरित्रां दुष्टां जानाति राघव: ।
    तथा लोकस्य साक्षी मां सर्वत: पातु पावक:॥
17. भरत ,नाट्यशास्त्र , 6/31 का परवर्ती गद्यभाग न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थ: प्रवर्तते।
18. आनंदवर्धन ध्वन्यालोक , 1/5.
19. विश्वनाथ ,सा० द० 1/3 . वाक्यं रसात्मकं काव्यं ।
20. सा०द० 1/2 का परवर्ती गद्यभाग । काव्यस्य शब्दार्थौ शरीरम् रसादिश्चात्मा।
21. आनंदवर्धन , ध्वन्यालोक, 3/21.

    प्रसिद्धेऽपि प्रबन्धानां नानारसनिबंधने ।
    एको रसोअ्ंगीकर्तव्यस्तेषामुत्कर्षमिच्छता॥

22. ध्वन्यालोक 3/22 की वृत्ति।
23. शास्त्री के० आर०स्टडीज़ इन रामायण , भाग - 2, पृष्ट 125.
24. आनन्दवर्घन ,ध्वन्यालोक, चतुर्थ उद्धोत ।
25. विश्वनाथ ,सा० द० ,4/10. का परवर्ती गद्यभाग ।
26. विश्वनाथ , सा० द०, 3/222-225.
27.वाल्मीकि रा० ,1/2/40.

संदर्भित-ग्रंथ

काव्यप्रकाश

ध्वन्यालोक

शास्त्री के० आर०स्टडीज़ इन रामायण

साहित्य दर्पण

नाट्यशास्त्र

कव्यालांकार सूत्र

वाल्मीकि रामायण